Open Access
उदयगिरी - बहुभाषिक इतिहास संशोधन पत्रिका
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://udayagiri.aaassher.org/
ISSN (Online): 2583-8423
Volume 1, Issue 1, April 2023; Pages 09 –12
Original Research Article

मराठवाडा के प्रमुख संत

बालाजी विलासराव महाळंकर
हिन्दी विभाग, कै. बापूसाहेब पाटील एकंबेकर महाविद्यालय, उदगीर जिला लातूर ४१३५१७ महाराष्ट्र, भारत
E-mail: balajimahalankar@gmail.com

Received: 19 February, 2023 | Accepted: 16 March, 2023 | Published: 18 March, 2023

महाराष्ट्र के प्रमुख संभागों में से एक 'मराठवाडा' संभाग है जो संतों की पावनभूमि के रुप में जाना जाता है । मराठवाडा संभाग की भाषा मराठी है । मराठवाडा के कई ऐसे संत है जिन्होंने विश्व को न केवल ईश्वर भक्ति का मार्ग बतलाया बल्कि विश्व को जीवन जीने का भी मार्ग बतलाया । उन्होंने कई ऐसे विचार रखे जो समाज को दीपस्तंभ बनकर समाज को पथदर्शन करते हैं । संकुचित भावना से उपर उठकर विश्व को ही अपना घर बनाया, 'हे विश्वचि माझे घर'। जाति-पाँति से उपर उठकर मानवता का पाठ पढाया । संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत नामदेव, संत गोरा कुंभार, संत बहिनाबाई आदि संत न केवल मराठवाडा या महाराष्ट्र का भूषण है बल्कि भारत की विश्व को देन है । उनकी कथनी और करनी में समानता है । उनकी वाणी और लेखणी दीन शोषितों का पक्ष लेकर शोषकों की आँखे खोलनेवाली है । वे संत होकर भी समाजसुधारक थे । संत तुकाराम के विचार संत कबीर और संत बसवेश्वर जैसे हैं । सभी संतों ने अपने स्वार्थ से उपर उठकर संसार की चिंता की ... उसी के लिए अपना जीवन न्योछावर किया । उनमें से मराठवाडा के प्रमुख संत निम्नांकित हैं--

१) संत ज्ञानेश्वर (इ.स. १२७५ – १२९६)

संत ज्ञानेश्वर का जन्म औरंगाबाद जिले के पैठण तहसील के आपेगाव में १२७५ में हुआ । उनका मूल नाम ज्ञानदेव विठ्ठलपंत कुलकर्णी था । वे १३ वीं शताब्दी के प्रसिध्द मराठी संत और कवि हैं । वे भागवत संप्रदाय के प्रवर्तक हैं। संत ज्ञानेश्वर ने भावार्थदीपिका (ज्ञानेश्वरी), अमृतानुभव, चांगदेवपासष्टी और हरिपाठ के अभंग आदि रचनाएँ की हैं। उनके लेखन की भाषा मराठी थी। सामान्यलोगों को भगवद्गीता समझने के लिये 'भावार्थदीपिका' नाम से अनुवाद किया । संत ज्ञानेश्वर ने पुणा के पास आळंदी के इंद्रायणी नदी के किनारे २१ वर्ष की आयु मे समाधि ली । संत ज्ञानेश्वर की गणना भारत के महान संतों एवं मराठी कवियों में होती है । इन पर मराठी फिल्म बनी है । संत ज्ञानेश्वर की महानता मानवीयता को गरीमा प्रदाण करने में और दुखितों की वेदना दूर कर उनकी इच्छापूर्ति की आकांक्षा में है

"दुरितांचे तिमिर जावो । विश्व स्वधर्म सूर्ये पाहो ।
जो जे वांछिल तो ते लाहो । प्राणिजात ।"

२) संत नामदेव (इ.स. १२७० - १३५०)

संत नामदेव भारत के प्रसिध्द संतों में से एक है । नामदेव महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय (तुलसी की माला पहननेवाला माळकरी संप्रदाय) के कवि हैं । उन्होंने मराठी और हिन्दी भाषा में पद लिखे हैं। उनके लगभग ढाई हजार मराठी अभंग 'नामदेवाची गाथा' में संकलित है। नामदेव का जन्म इ.स. १२७० में हुआ। मराठी कवि ज.र. आजगावकर नामदेव के जन्मगाँव के बारे में कहते हैं, ''नामेव का जन्म मराठवाडे के परभणी जिले के नरसी बामणी गाँव में हुआ''[१]।(नामदेव नरसी बामणी (जि.परभणी) या मराठवाडयाच्या भूमित जन्मले) उनके पिता का नाम दामा शेट और माता का नाम गोनाबाई था। वे जाति के दरजी थे। नामदेव का मन घर – गृहस्थी में नहीं रमा। वे पंढरपुर जाकर विठ्ठल भक्ति करने लगे। पंढरपुर में उनकी भेंट ज्ञानेश्वर तथा उनके भाई-बहनों से हुई और उनकी प्रेरणा से उन्होंने विसोबा खेचर से गुरु-दीक्षा ली। उन्होंने काशी, गया, अयोध्या, हरिद्वार, मथूरा आदि की तीर्थयात्राएँ संत ज्ञानेश्वर के साथ की थी। ज्ञानेश्वर के समाधिस्त हो जाने के बाद नामदेवजी का मन पंढरपूर से उचट गया। उन्होंने जीवन के अंतिम बीस वर्ष पंजाब में बिताए। वहाँ उन्होंने लगभग २३० हिंदी पदों की रचना की। पंजाब के गुरुदासपुर जिले में घुमान नामक स्थान पर उनके नाम का गुरुद्वारा 'बाबा नामदेवजी' आज भी विद्यमान है। शिखों के गुरु अर्जुनसिंगने गुरुग्रंथसाहेब में नामदेव के ६१ पदों का समावेश किया है। उनकी मृत्यु ८० वर्ष की आयु में १३५० ईस्वी में हुई।

३) संत एकनाथ (इ.स. १५३३ - १५९९)

संत एकनाथ का जन्म औरंगाबाद जिले के पैठण में १५३३ इ.स. में हुआ। ये संत भानुदास के पुत्र थे। इन्होंने संत ज्ञानेश्वर द्वारा प्रवृत्त साहित्यिक तथा धार्मिक कार्य का सब प्रकार से उत्कर्ष किया। वे बुध्दिमान थे। इन्होंने मानवता से प्रभावित होकर अछुतोध्दार का प्रयास किया। ये जितने महान संत थे वे उतने ही महान कवि थे। ''महाराष्ट्र की अत्यंत विषम अवस्था में इनको साहित्यसृष्टी करनी पडी। मराठी भाषा, ऊर्दु-फारसी से दब गयी थी। दूसरी ओर संस्कृत के पंडित देशभाषा मराठी का विरोध करते थे। इन्होंने मराठी के माध्यम से ही जनता को जागृत करने का बीडा उठाया।''[२] संत एकनाथ ने कई रचना लिखी हैं, जिनमें चतुश्लोकी भागवत, पौराणिक आख्यान और संतचरित्र, भागवत, भावार्थ रामायण, रुक्मिणी स्वयंवर, भावार्थ रामायण, साथ में लोकगीत (भारुड) और मराठी एवं हिंदी में अभंग लिखे हैं। संत एकनाथ की दृष्टि व्यापक, उदात्त, सर्वसमावेशक या समतावादी थी। संत एकनाथ की व्यापकदृष्टि के बारे में शिंदे अनंत ने अपने शोध प्रबंध में लिखा है, ''सभी प्राणीयों पर प्रेम किया और दुखियोंकी चिंता पुरे जीवन की... महारोंकी (विशिष्ठ दति जाति) बच्चों को उठाकर महारवाडे में पहूंचाना, उनके घर खाना खाने जाना, काशी से लाया गया गंगा का पानी प्यासे गधे को पिलाना आदि किया...''[३] (सर्व प्राणीमात्रावर प्रेम करणे व दु:खितांची कणव करणे हे त्यांनी आयुष्यभर केले. महारांच्या मुलास कडेवर घेवून महारवाडयात पोचविणे, त्यांच्या घरी जेवायला जाणे, काशीहून आणलेली गंगेचे पाणी तहानलेल्या गाढवाच्या मुखी घालणे इत्यादी कार्य केले).

४) संत गोरा कुंभार (गोरोबा काका) (इ.स. १२६७ - १३१७)

संत गोरा कुंभार का जन्म मराठवाडा के उस्मानाबाद (धाराशिव) जिले के 'तेरढोकी' गाँव में इ.स. १२६७ में हुआ। संत गोरा कुंभार, संत ज्ञानेश्वर और संत नामदेव के समकालीन थे। उन्हें दो बिबियाँ और एक पुत्र था। वे जात के कुम्हार होने के कारण मटकी बनाने का काम करते थे। वे पंढरपूर के विठ्ठल के असीम भक्त थे। वे अपने आराध्य की भक्ति में इतने तल्लीन होते थे की आजू बाजू की उन्हें कुछ भी सुझ नहीं रहती थी। उनके

बारे में एक अख्यायिका है कि एक बार वे मटकियाँ बनाने के लिए पैरों से मिट्टी मल रहे थे और भगवान की आराधना में तल्लीन होकर भगवान का नामस्मरण कर रहे थे तब उनका बच्चा रेंगते रेंगते उस मिट्टी के किचड में आ गया। वे अपने आराध्य की भक्ति में इतने तल्लीन हो गये थे कि अपने बच्चे को भी मिट्टी के साथ रौंदने लगे जिससे उसकी मृत्यु हो गई। उनकी पत्नी ने जब यह दृश्य देखा तब उनकी सुधी आ गयी। इससे उन्हे मनस्वी पश्चाताप हो रहा था तभी कुछ समय बाद भगवान की कृपा से उनका बच्चा जिवित हेा गया। संत गोरोबाकाका के बीस अभंग सकलसंतगाथा में सम्मिलित है। संत गोरा कुंभार पर १९७८ में हिंदी फिल्म बनी है जिसका नाम भगत गोरा कुंभार है। उसका दिग्दर्शन दिनेश रावल ने किया है। साथ में मराठी भाषा में भी गोरा कुंभार पर एक फिल्म और नाटक बनाया।

५) संत जनाबाई (इ.स. १२६० - १३५३)

संत जनाबाई का जन्म मराइवाडा के परभणी जिले के गोदावरी के किनारे पर गंगाखेड में इ.स. १२६० में हुआ। यह शूद्र जाति में जन्मी स्त्री संत थी। जनाबाई संत नामदेव की समकालीन वारकरी संत-कवियित्री थी और उनके घर में काम करती थी। उनके माँ का नाम करंड और पिता का नाम दमा था। महाराष्ट्र के ग्रामीण भाग में महिला घर में चक्की पिसते वक्त संत जनाबाई की ओव्या (अभंग) गाती है। संत जनाबाई के ३५० अभंग सकल संत गाथा में संकलित है। वह पंढरपुर के विट्ठल की भक्त थी। सभी संतों ने जातिगत भेदभाव से उपर उठकर सभी मनुष्य को समान माना इसी का लाभ संत जनाबाई को हुआ क्यूँकि वह शूद्र होने के बावजूद सभी समाज ने उन्हें संत की उपाधि दी। संत जनाबाई ने अपनी कविताओं के माध्यम से जनता को यह समझाने का प्रयास किया कि किस तरह से मनुष्य संसार में रहकर स्वयं के निहित कार्य कर के ईश्वर की प्राप्ति कर सकता है, उसके लिए नामस्मरण को आवश्यक माना।

६) संत बहिणाबाई (इ.स. १६२९ - १७००)

संत बहिणाबाई पाठक का जन्म मराठवाडे के औरंगाबाद जिले के वैजापुर तहसील के देवगांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनकी माँ का नाम जानकी और पिता का नाम आऊजी कुलकर्णी था। उस समय के परिस्थिति के अनुसार उनका विवाह पाँच वर्ष की आयु में रत्नाकर पाठक से हुआ। वह संत तुकाराम की शिष्या थी। उन्होंने जीवनभर पंढरपुर के पांडूरंग की भक्ति की है। उनके अभंगो के बारे में डॉ. शिंदे अनंतराव कहते है, "संत बहिणाबाईचे एकूण ५०० अभंग उपलब्ध आहेत. त्यात भक्तिपर, ज्ञानपर, पांडूरंगावर पदे, गौळणी, भारुडे इत्यादी आहेत."[४] बहिणाबाई का "ज्ञानदेवे रचिला पाया तुका झालासे कळस" यह उनका प्रसिध्द अभंग है। इस अभंग में उन्होंने सभी संतों की महत्ता व्यक्त करने का प्रयास किया है –

"संत कृपा झाली इमारत फळा आली।
ज्ञानदेवे रचिला पाया उभारिले देवालय।
नामा तयाचा किन्कर तेणे विस्तरिले आवार।
जनी जनार्दन एकनाथ स्तंभ दिला भागवत।
तुका झालेसे कळस भजन करा सावकाश।
बहिणा फडकती ध्वजा तेणे रुप केले ओजा।।"

७) संत धुंडा महाराज

संत धुंडा महाराज की पहचान ज्ञानेश्वरी के अभ्यासक के रुप में होती है। संत धुंडा महाराज का जन्म नांदेड जिले के देगलूर में हुआ। देगलूरकर परिवार के संत परंपरा का इतिहास दो सौ साठ बरस का है। धुंडा महाराज ने इसी परंपरा को आगे बढाने का प्रयास किया। धुंडा महाराज ने संत साहित्यपर मौलिक लेखन कर वारकरी संप्रदाय के विचारों का प्रसार पूरे भारत में किया। संत धुंडा महाराज के जीवन के बारे में डॉ. रवींद्र बेंबरे लिखते है, "पारायण, चिंतन, मनन, प्रबोधन, प्रवचन, कीर्तन, वारी, चातुर्मास और प्रवास ही महाराज का जीवन था ।"[५] (पारायण, चिंतन, मनन, प्रबोधन, प्रवचन, कीर्तन, वारी, चातुर्मास आणि प्रवास म्हणजेव महाराजांचे जीवन होते)

मराठवाडे के इन संतों ने अपने आचरण और शाश्वत विचारों से विश्व को आलोकित किया है। इन महान संतों ने स्वयं दुःख झेलकर विश्व को सतमार्ग, शांति, प्रेम और समता का पाठ पढाया है। संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत एकनाथ, संत जनाबाई, संत गोरा कुंभार, संत बहिणाबाई, संत धुंडा महाराज आदि संतों ने अपने जन्म, कृति और विचारों से इस मराठवाडे के बंजर भूमि को पावन भूमि बनाया है।

संदर्भ

१. आजगावकर ज.र., १९६५ प्राचीन मराठी संत कवी पुणे, आजगावकर लेखन भांडार पृ. १०६
२. संत एकनाथ – wikipedia – www.google.co.in
३. मराठवाडयातील वारकरी संप्रदाय : एक चिकित्सक अभ्यास (शोध प्रबंध) - अनंत नामदेवराव शिंदे, पृ. ४२-४३
४. वही पृ. ४८
५. रवींद्र बेम्बरे – ज्ञानेश्वरीचे उपासक धूंडा महाराज देगलूरकर (www.thinkMaharashtra.com)